माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य एवं उनकी प्रासंगिकता

मिनाक्षी शर्मा
सहायक प्रोफेसर
संत निश्छल सिंह कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन फॉर वूमेन
जगाधरी (यमूनानगर)

सारांश

भाषा शिक्षण (हिन्दी शिक्षण) के द्वारा विद्यार्थियों को दूसरों की मौखिक तथा लिखित भाषा का समझने तथा अपने भावों तथा विचारों को मौखिक तथा लिखित भाषा में अभिव्यक्त करने के योग्य बनाया जाता है। हिन्दी-शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की चर्चा करते समय इसके मातृभाषा रूप में ज्ञान प्राप्त करने और मनोरंजन के लिए पढ़ना-लिखना, सिखना, गद्य-पद्य में निहित आनन्द और चमत्कार से परिचय प्राप्त कराना, पुस्तकों में निहित ज्ञान-भण्डार का अवलोकन कराना तथा बालक की स्वाध्यायशीलता के प्रति रूचि उत्पत्र करना, बालकों को भाषा के क्रमबद्ध विचार-प्रणाली, कला सौन्दर्य और भावभिव्यंजन में दक्ष बनाना ही मातृभाषा-शिक्षण के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। माध्यमिक स्तर पर पाठ्य-पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों की मानसिक आवश्यकताओं के अनुकूल होना एवं ऐसे विषयों का समावेश होना चाहिए जिन से उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं पूरी हों। जीवन-केन्द्रित पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होती है। इससे उनमें जीवन की वास्तविकताओं को समझने की योग्यता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

प्रस्तावना :

डार्विन (Darwin), प्रेयर (Preyer), सुली (Sully), शिन (Shinn) आदि भाषा-विदों ने अपने अन्वेषणों से इस बात को स्पष्ट किया है कि जन्म लेने के पश्चात् बच्चे का चीखना, विभिन्न प्रकार की आवाज निकालना तथा बड़बड़ानी उसकी भाषा का आधार है। यद्यपि उस की इन आवाजों को कोई नही समझ पाता परन्तु मां उन्हें अवश्य समझ लेती है। इस प्रकार कुछ समय तक भाषा का यह आरम्भिक रूप बच्चे और माता के बीच भावनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम बना रहता है। भाषा शिक्षण (हिन्दी शिक्षण) के द्वारा विद्यार्थियों को दूसरों की मौखिक तथा लिखित भाषा का समझने तथा अपने भावों तथा विचारों को मौखिक तथा लिखित भाषा में अभिव्यक्त करने के योग्य बनाया जाता है। भाषा-शिक्षण द्वारा उन्हें विभिन्न प्रकार के ज्ञान से अवगत कराया जाता है और उनके व्यक्तित्व को सन्तुलित विकास की ओर अग्रसर किया जाता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति

के लिए शिक्षा के विभिन्न स्तरों- प्राईमरी, मिडल, हाई, हायर-सैकेण्डरी में से गुजरना होता है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों को कितना ज्ञान प्रदान किया जाये; उन्हें किस कौशल में किस सीमा तक प्रशिक्षित किया जाये और उनमें किन रूचियों तथा अभिवृत्तियों को किस सीमा तक विकसित किया जाये - इसका निर्णय करते हुए विषय सामग्री तथा पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है। अध्यापक को यह पाठ्यक्रम निर्धारित समय पर समाप्त करना होता है। इसी प्रकार प्रत्येक विषय- गणित, सामाजिक शास्त्र, विज्ञान आदि- का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है जिसका अनुसरण करते हुए अध्यापक निर्धारित समय में शिक्षा के वांछित उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करता है। अतः पाठ्यक्रम विषय-सामग्री का वह क्रमबद्ध रूप है जिसे अध्यापक को निश्चित समय में पढ़ाना होता है और विद्यार्थियों को निश्चित समय में पढ़ना होता है। इस विषय-सामग्री का कुछ भाग पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है और कुछ के निर्देशक संकेत अध्यापक को दिये जाते हैं। उदाहरण स्वरूप हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रत्येक कक्षा में एक या दो पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित की जाती हैं परन्तु रचना-कार्य के लिए कोई पाठ्य-पुस्तक निर्धारित नहीं की जाती। रचना-कार्य के लिए इतना निर्देश दिया जाता है- 'विद्यार्थियों में अपने व्यवहारिक अनुभवों, विभिन्न उत्सवों एवं त्योहारों तथा घटनाओं को शुद्ध भाषा में व्यक्त करने की योग्यता का विकास होना चाहिए। इस निर्देशक संकेत के अनुसार अध्यापक विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के निबन्ध लिखवाने की योजना बनाता है। इसी प्रकार पत्र-लेखन, कहानी-लेखन तथा प्रयोगात्मक व्याकरण का पाठ्य-क्रम भी निर्देशक संकेतों द्वारा सूचित किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह पाठ्य-क्रम केवल पाठ्य-पुस्तकों तक सीमित नहीं होता बल्कि उसमें कई निर्देशक-संकेतों का भी समावेश होता है। फिर इसी पाठ्य-क्रम के आधार पर विद्यार्थियों की योग्यताओं का परीक्षण किया जाता है।

गांधी जी ने सुझाया था कि बच्चे को रूपांतरित होते सामाजिक परिदृश्य का एक अंग बनाने के लिए बच्चे के आस-पास के पर्यावरण, जिसमें मातृभाषा एवं कार्य भी आते है, का एक साधन के रूप में उपयोग किया जाए। उन्होने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें प्रत्येक बालक अपनी योग्यता व संभावनाओ की तलाश कर सके और दूसरो के साथ विश्व के पुनर्निर्माण के लिए काम कर सके, एक ऐसा विश्व जिसमें आज भी राष्ट्रो के बीच समाज के भीतर, तथा मानवता व प्रकृति के बीच संघर्ष बरकरार हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा की परिकल्पना शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाने के साधन के रूप में की। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियों तथा राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व शामिल होंगे। ये मुद्दे किसी एक विषय का हिस्सा न होकर लगभग सभी विषयों में पिरोये जाएँगे। इनके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों को हर व्यक्ति की सोच और जिन्दगी का हिससा बनाने की कोशिश की जाएगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में ये बातें शामिल हैंः हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री-पुरुषों के बीच समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों के अनुरूप ही आयोजित हों। भारत ने विभिन्न देशों में शांति और आपसी भाईचारे के लिए सदा प्रयत्न किया है, और ''वसुदैव कुटुबकम'' के आदर्शों का संजोया है। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था का प्रयास यह होगा कि नयी पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना बढ़े। शिक्षा के पहलू की उपेक्षा नहीं की जा सकती। समानता के उद्देश्य को साकार है जिसमें सभी को शिक्षा में सफलता प्रापत करने के समान अवसर मिलें। इसके अतिरिक्त, समानता की मूलभूत अनुभूति केंद्रिक पाठ्यचर्या के द्वारा करवाई जाएगी। वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य है कि सामाजिक माहौल और जन्म के संयोग से उत्पन्न पूर्वग्रह और कुंठाएँ दूर हों।[1]

शिक्षण-शास्त्र को रचनात्मक खोज करने वाले संसाधनों पर निर्भर होना चाहिए। अगर पूरी शिक्षा, एक सशक्त अर्थों में, नैतिक शिक्षा है तथा यदि नैतिक मामलों में साधन और साध्य जैविक या आंतरिक रूप से जुड़े है, उसे अपनी भूमिका में सदाचार की जीवंत मूर्ति के रूप दिखाई देना चाहिए।[2] उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही किसी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को संकलन करना एवं उनका अनुपालन करना समाज में भाषा विकास में सहायक सिद्ध होता है।

हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

हिन्दी-शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की चर्चा करते समय इसके मातृभाषा रूप का ही वहाँ पर विशेष ध्यान रखा जा रहा है। मातृभाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली भाषा में छात्र अपने भावों, विचारों एवं अनुभेतियों की अभिव्यक्ति कर सकें।

[1] राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली पृष्ट संख्या-5
[2] रवीन्द्र नाथ टैगोर, 'माई स्कूल' इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ टैगोर, खण्ड 2, संपा, शिशिर कुमार दास, साहित्य अकादेमी, 1996

2. छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे उचित भाव-भंगिमाओं के साथ वाचन करके काव्य-कला एवं अभिनय-कला का आनन्द प्राप्त कर सकें और साथ ही, अपने मानसिक सुख-दुखामक भावनाओं के प्रति सन्तुष्टि प्राप्त कर सकें।
3. ज्ञान प्राप्त करने और मनोरंजन के लिए पढ़ना-लिखना, सिखना, गद्य-पद्य में निहित आनन्द और चमत्कार से परिचय प्राप्त कराना, पुस्तकों में निहित ज्ञान-भण्डार का अवलोकन कराना तथा बालक की स्वाध्यायशीलता के प्रति रूचि उत्पत्र करना मातृभाषा-शिक्षण के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं।
4. क्रमबद्ध विचार-प्रणाली और भाविभव्यंजन में दक्ष बनाना। बालकों के शब्दों, वाक्यांशों तथा लोकोक्तियों आदि के कोष में वृद्धि करना।
5. उनको शुद्धता एवं गति का निरन्तर विकास करते हुए वाचन का अभ्यास कराना। ज्ञान-क्षेत्र तथा विवेक का निरन्तर विकास करते हुए चरित्र-निर्माण कराना।
6. विभित्र शैलियों का परिचय कराकर अपनी उपयुक्त शैली के विकास में सहायता कराना। उन्हें सत्साहित्य के सृजन की प्रेरणा देना, जिससे वे अपने अवकाश के समय के सदुपयोग द्वारा अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुसंस्कृत एवं सुखी बना सकें।
7. बालकों को मानव-स्वभाव एवं चरित्र के अध्ययन का अवसर प्रदान करना। उन्हें भावानुकूल, भाषा-प्रयोग, स्वर-निर्माण एवं अंग-संचालन की कला का अभ्यास कराना।

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी-भाषा (मातृभाषा) शिक्षण के उद्देश्य

इस स्तर पर पहुँचने के पूर्व छात्र को अपनी मातृभाषा हिन्दी की जानकारी हो जाती है। वह लेखन एवं पाठन में कुछ दक्षता प्राप्त कर लेता है। उसमें श्रवण एवं अभिव्यक्ति की भी क्षमता रहती है। इसलिए इस स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. छात्रों में पठन कला की निपुणता की भावना भरना।
2. छात्रों में सौन्दर्यानुभूति की भावना का विकास करना तथा बालकों में पाठ के रस भावों को समझने एवं ग्रहण करने की क्षमता पैदा करना।
3. छात्रों को उचित गति से लिखने का अभ्यास करना। छात्रों के शब्द एवं सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।

4. छात्रों को निबन्ध, संवाद, सारांश-पत्र आदि लिखने की कला में दक्षता पैदा करने का प्रयास करना।
5. उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करना। छात्रों को व्याकरण के नियमों आदि से परिचित कराना।
6. छात्रों में अभिनय, अनुकरण एवं संवाद की योग्यता पैदा करना। छात्रों में मौन वाचन की आदत का विकास करना तथा मौनवाचन के माध्यम से तथ्यों को ग्रहण करने की क्षमता पैदा करना।
7. छात्रों में कौन वाचन की आदत का विकास करना तथा मौनवाचन के माध्यम से तथ्यों को ग्रहण करने की क्षमता पैदा करना।

प्रासंगिकता :-

हिन्दी की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों का सबसे बड़ा दोष यह है कि वे विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं हैं। पाठ्य-पुस्तकों के रचनाकार तथा सम्पादक अपने पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए पाठ्य-पुस्तक की रचना करते हैं। परिणाम स्वरूप विद्यार्थी उसमें रूचि नहीं लेते और पाठ्य-पुस्तक को किसी प्रकार रट कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं। पाठ्य-पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए उसका विद्यार्थियों की मानसिक आवश्यकताओं के अनुकूल होना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें ऐसे विषयों का समावेश होना चाहिए जिन से उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं पूरी हों। जीवन-केन्द्रित पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होती है। इससे उनमें जीवन की वास्तविकताओं को समझने की योग्यता का विकास होता है। पाठ्य-पुस्तक के रचनाकार अथवा सम्पादक को जिस वय-वर्ग के बच्चों के लिए पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करना है उसे उस वय-वर्ग की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं तथा मानसिक रूचियों का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए- तभी वह विषय सामग्री को रोचक तथा उपयोगी बना सकेगा। पाठ्य-पुस्तक में रोचकता एवं मनोरंजनात्मकता का समावेश करने के लिए हास्य-व्यंग्यात्मक सामग्री का भी चयन किया जा सकता है, परन्तु यह सामग्री लचर, अश्लील तथा सस्ते किस्म की नहीं होनी चाहिए। यह सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में स्वस्था प्रवृत्ति का विकास हो। रोचकता एवं मनोरंजकात्मकता के नाम पर पाठ्य-पुस्तक में अति-काल्पनिक तथा अवैज्ञानिक सामग्री का समावेश नहीं होना चाहिए- जैसे जादू, टूना, भूत-प्रेत तथा परियों की कहानियां। ऐसे विषयों का बच्चों के मन पर गहरा प्रभाव

पड़ता है और वे अन्ध विश्वास का शिकार हो जाते हैं। ऐसे विषयों का समावेश स्वस्थ एवं अवैज्ञानिक विषयों का परिहार होना चाहिए एवं विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक अभिक्षमता का विकास हो सके। ऐसा नहीं है कि भाषा में केवल सौन्दर्यात्मक बिन्दुओं के विकास को विशेष महत्व हो बल्कि मानवीय जीवन के सभी पक्षों का स्वस्थ विकास को ध्यान में रखा जाना चाहिए। भाषा की पाठ्य-पुस्तक शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों में नैतिक तथा विकास से सम्बन्धित प्रेरक सामग्री का समावेश होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक के द्वारा विद्यार्थियों में सच्चाई, ईमानदारी, कर्मठता, कर्त्तव्य प्रायणता, सहयोगात्मकता, प्रेम, आज्ञाकारिता, साहिष्णुता, साहस, धैर्य, दया, परिश्रम, अनुशासन, विनम्रता, आत्म विश्वास, सहानुभूति आदि गुणों का विकास किया जाना चाहिए परन्तु ये सब गुण उपदेशात्मक शैली से नहीं सिखाये जाने चाहिए बल्कि परोक्षरूप से सिखाये जाने चाहिए। प्रत्येक पाठ में निहित आदर्श सीधे विद्यार्थियों के मन को प्रभावित करे। प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं का विभिन्न कक्षाओं के लिए चुनाव करते समय कक्षा के स्तर का ध्यान रखना चाहिए। कठिन, जटिल, रहस्यात्मक, एवं दार्शनिक रचनाओं में स्कूल स्तर के विद्यार्थियों को कोई रूचि नहीं होती। इसलिए हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी के महान साहित्यकारों का परिचय उनकी दार्शनिक कृतियों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए अपितु उनकी ऐसी रचनायें चुनी जानी चाहिए कि उनके मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुकूल हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली पृष्ट संख्या-5
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली पृष्ट संख्या-5
3. रवीन्द्र नाथ टैगोर, 'माई स्कूल' इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ टैगोर, खण्ड 2, संपा, शिशिर कुमार दास, साहित्य अकादेमी, 1996
4. गुप्ता, मनोरमाः 'भाषा अधिगम'', केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
5. पटेल, एम.एस. और सिंह, संध्या (2008) 'पाठ्यचर्चा -2005 के तहत कक्षा 12 की हिंदी पाठ्यपुस्तक पर विषय विशेषज्ञों और शिक्षकों की सीधी बातचित' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्ष 28 अंक 1 जुलाई, 2008 पृ. 56–67